हिंदी प्रकोष्ठ की अर्द्धवार्षिक पत्रिका

ज्ञानधारा

शिशिर अंक | 2023

विज्ञानं ब्रह्म

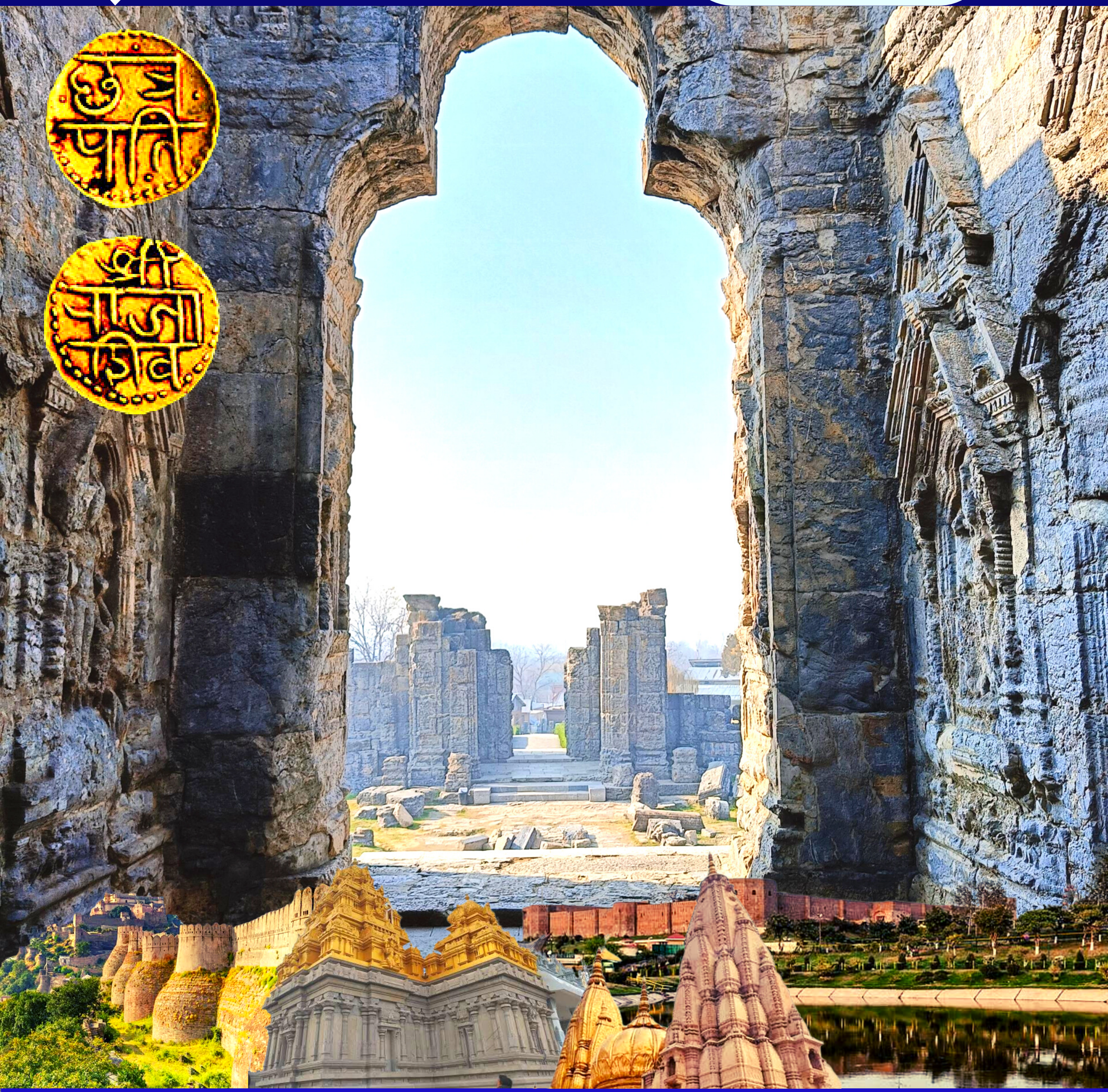

श्री माता वैष्णो देवी विश्वविद्यालय, कटड़ा, जम्मू एवं कश्मीर (भारत)

विज्ञानं ब्रह्म

Prof. Pragati Kumar
Vice-Chancellor
प्रो० प्रगति कुमार
कुलपति

Shri Mata Vaishno Devi University

Kakryal, Katra–182320 (J&K) INDIA
(A Statutory Technical University established by J&K Legislature; recognized u/s 2(f) & 12(B) of UGC)

Mob./मो० : 9419281008
Tel: (O)/दूरभाष : 01991-285686,Fax/फैक्स:01991-285573
E-mail/ईमेल :vc@smvdu.ac.in ; vc.pk@smvdu.ac.in
: Website/वेबसाइट: www.smvdu.ac.in

कुलपति संदेश

मुझे यह जानकर अत्यंत प्रसन्नता की अनुभूति हो रही है की विश्वविद्यालय के हिन्दी प्रकोष्ठ की ज्ञानधारा पत्रिका का शिशिर अंक 2023 प्रकाशित हो रहा है। पत्रिका का यह अंक भारत के सांस्कृतिक जागरण को समर्पित है, सांस्कृतिक उत्थान के लिए अनेक ऋषियों-मनीषियों ने अपना सम्पूर्ण ज्ञान एवं जीवन अर्पित कर दिया जिससे भारत की महानता विश्व गुरु के रूप में प्रतिष्ठित हुई। मुझे विश्वास है की इस अंक के माध्यम से पाठकों में भारतीय संस्कृति के प्रति ज्ञान एवं समर्पण भाव उत्पन्न होगा।

हिन्दी प्रकोष्ठ द्वारा हाल ही में हिन्दी पखवाड़ा 2023 का सफल आयोजन किया गया है जिसके लिए मैं आयोजकों को शुभकामनाएं प्रेषित करता हूँ। हिन्दी के प्रचार प्रसार के लिए हिन्दी प्रकोष्ठ द्वारा किए जा रहे कार्य अत्यंत प्रशंसनीय है। इस अंक का प्रकाशन ऐसे पुनीत समय हो रहा है जब भारत अपनी स्वतंत्रता का अमृत महोत्सव मना रहा है, G-20 की अध्यक्षता कर रहा है। भारत छत्रपति शिवाजी महाराज के राज्याभिषेक के 350 वर्ष एवं स्वामी दयानंद सरस्वती की जयंती के 200 वें वर्ष का उत्सव मना रहा है।

हिन्दी प्रकोष्ठ के संरक्षक के रूप में मैं हिन्दी प्रकोष्ठ के नोडल अधिकारी व पत्रिका के संपादक डॉ. अमिताभ विक्रम द्विवेदी (आचार्य, भाषा एवं साहित्य विभाग), छात्र सचिव मिलिन्द शुक्ल (छात्र, यांत्रिक अभियांत्रिकी) एवं पत्रिका मंडल को हार्दिक शुभकामनाएं प्रेषित करता हूँ। साथ ही आशा करता हूँ की माँ वैष्णो देवी की कृपा से यह पत्रिका निरंतर ज्ञान का प्रकाश प्रकाशित करती रहेगी।

धन्यवाद!

प्रगति कुमार
17.10.2023
(प्रगति कुमार)
कुलपति

डॉ. अमिताभ विक्रम द्विवेदी
(आचार्य, भाषा एवं साहित्य विभाग)
नोडल अधिकारी, हिन्दी प्रकोष्ठ

विज्ञानं ब्रह्म

संदेश

हिन्दी प्रकोष्ठ निरंतर हिन्दी भाषा के प्रचार प्रसार के लिए कार्यरत है। ज्ञानधारा पत्रिका हिन्दी के प्रसार के साथ ही ज्ञानवर्धक जानकारियाँ प्रदान करती है, इस पत्रिका के दोनों अंक "शरद व शिशिर" प्रेरणा, राष्ट्रप्रेम एवं नव चेतना से परिपूर्ण रहते हैं। इस पत्रिका के संकलन व अभिकल्पन में छात्र सचिव मिलिन्द शुक्ल (२०बीएमई०२२) का विशेष योगदान है, जिन्होने अपना बहुमूल्य समय देकर इस पत्रिका को संकलित किया। मैं उनके उज्ज्वल भविष्य हेतु शुभकामनाएं देता हूँ, साथ ही मुझे विश्वास है की ज्ञानधारा पत्रिका निरंतर प्रेरणा एवं नव चेतना का संचार पाठकों में करती रहेगी।

धन्यवाद

-डॉ. अमिताभ विक्रम द्विवेदी
(नोडल अधिकारी, हिन्दी प्रकोष्ठ)

hindi.cell@smvdu.ac.in hindicell.smvdu.ac.in
हिन्दी प्रकोष्ठ, श्री माता वैष्णो देवी विश्वविद्यालय, कटड़ा, जम्मू एवं कश्मीर (भारत)-१८२३२०

--संरक्षक--

प्रो. प्रगति कुमार

(माननीय कुलपति)

--सम्पादक--

डॉ. अमिताभ विक्रम द्विवेदी

(नोडल अधिकारी)

--सह-संपादक--

मिलिन्द शुक्ल

(छात्र सचिव)

क्रम

शीर्षक	पृष्ठ संख्या
• चापेकर बंधु	3
• और भी दूं	5
• वन्दे मातरम्	6
• श्री रामकृष्ण परमहंस की प्रेरक भूमिका	8
• मेंढक राज और नाग	10
• तमसो मा ज्योतिर्गमय	13
• तोड़ती पत्थर	16
• कला कुंज	19
• भारत के प्राचीन सूर्य मंदिर	21

।। प्रज्ञानं ब्रह्म ।।

श्रीगीता ज्ञान

श्रद्धावान्ल्लभते ज्ञानं तत्परः संयतेन्द्रियः।
ज्ञानं लब्ध्वा परां शान्तिमचिरेणाधिगच्छति॥

(चतुर्थ अध्याय, श्लोक ३९)

श्रद्धा रखने वाले मनुष्य, अपनी इन्द्रियों पर संयम रखने वाले मनुष्य, साधनपारायण हो अपनी तत्परता से ज्ञान प्राप्त करते हैं, फिर ज्ञान मिल जाने पर जल्द ही परम-शान्ति (भगवत्प्राप्तिरूप परम शान्ति) को प्राप्त होते हैं।

॥ॐ श्री वैष्णवी नमः॥

चापेकर बंधु

भारत के स्वतंत्रता आंदोलन में असंख्य लोगों ने अपना योगदान दिया। आज समूचा देश उन क्रांतिवीरों के प्रति कृतज्ञ है, जिन्होंने अपने हृदय के रक्त से स्वतंत्रता आंदोलन को सींचा। ऐसे ही वीर हुए महाराष्ट्र के चापेकर बंधु। चापेकर बंधु के रूप में, दामोदर हरि चापेकर, बालकृष्ण चापेकर और वासुदेव चापेकर प्रसिद्ध हैं। तीनों ही भाई, बाल गंगाधर तिलक से अत्यधिक प्रेरित थे। उनकी प्रेरणा से वे राष्ट्रहित के कार्य में संलग्न हुए और अपने प्राणों की आहुति दी।

वर्ष 1896 में पुणे समेत महाराष्ट्र के अधिकांश स्थानों में प्लेग का प्रकोप फैला। तत्कालीन ब्रिटिश सरकार ने लोगों की सहायता करने के स्थान पर, उन पर अत्याचार करना प्रारंभ कर दिया। पुणे में प्लेग निवारण समिति के अध्यक्ष चार्ल्स रैंड थे। राहत पहुंचाने की जगह उन्होंने आम जनता को प्रताड़ित करना शुरू कर दिया। चापेकर बन्धु इससे बेहद क्रुद्ध हो गए। वे अपने देशवासियों को बीमारी से तड़पता देख रहे थे। ब्रिटिश सरकार की अव्यवस्था के कारण भी कई लोगों की मृत्यु हुई। इसके अतिरिक्त चार्लस रैंड के सहयोगी अधिकारी आर्यस्ट भी लोकमान्य बाल गंगाधर तिलक को बेहद कष्ट पहुंचा रहे थे। वे आम भारतीयों की भावनाओं का भी सम्मान नहीं करते थे और मंदिरों व पूजाघरों में जूते और चप्पल पहनकर घुस जाया करते थे। इसका विरोध करने पर बाल गंगाधर तिलक कई बार जेल भी गए। प्लेग के प्रकोप और ब्रिटिश अधिकारियों के अत्याचार के प्रतिरोध में चापेकर बंधुओ ने कमर कस ली। उन्होंने इन अधिकारियों को सबक सिखाने का निश्चय कर लिया।

वह 22 जून, 1897 का दिन था। आधी ही रात हुई थी। अंग्रेजों द्वारा पुणे के गवर्नमेंट हाउस में महारानी विक्टोरिया की हीरक जयंती का उत्सव मनाया जा रहा था। उत्सव समाप्त होने के बाद, पुणे की स्पेशल प्लेग कमेटी के अध्यक्ष के रूप में नियुक्त किए गए, चार्ल्स रैंड अपने तांगे पर सवार हो कर जा रहे थे। इनके पीछे सैन्य अनुरक्षक लेफ्टिनेंट आयेर्स्ट अपने तांगे में चल रहे थे। इसी बीच चापेकर बन्धु, गणेश खिंड रोड पर हाथों में बंदूक और तलवार लिए, अधिकारियों की प्रतीक्षा कर रहे थे।

रैंड को गोली मारने के तुरंत बाद दामोदर को गिरफ्तार कर जेल भेजा गया और उन्हें मौत की सजा दी गई। जेल में इनकी भेंट बाल गंगाधर तिलक से हुई, जिन्हें भी गिरफ्तारी के बाद यरवदा जेल में रखा गया था। बालकृष्ण, वासुदेव और महादेव रानडे भी रैंड की हत्या में शामिल थे, पर ब्रिटिश सरकार उन्हें गिरफ्तार नहीं कर पायी थी। चापेकर बन्धुओं के क्लब में ही दो भाई थे - गणेश शंकर द्रविड़ और रामचन्द्र द्रविड़। दुर्भाग्यवश द्रविड़ भाइयों ने, जो खुद भी चापेकर क्लब का हिस्सा थे, कुछ ब्रिटिश अफसरों को इनके ठिकानों की जानकारी दे दी। इसके बाद उन्हें गिरफ्तार कर लिया गया और मौत की सजा दी गई। पंजाब केसरी लाला लाजपत राय ने चापेकर बंधुओं की मृत्यु पर लिखा था कि, वे वास्तव में भारत के क्रांतिकारी आंदोलन के जनक थे।

भारतीय इतिहास में पहली बार एक ही माता की तीन-तीन संतानों ने वंदे मातरम् का जयघोष करते हुए अपने प्राणों की आहुति दे दी थी। जब भगिनी निवेदिता चापेकर बंधुओं की मां दुर्गाबाई चापेकर को सांत्वना देने गई तो मां ने निवेदिता से कहा, 'इसमें शोक कैसा? मेरे बेटे तो दुखियों-पीड़ितों की रक्षा में बलिदान हो गए और इसलिए फांसी चढ़े कि देश का भला हो। बेटी! तुम दुख मत करो, तुम्हारे दुख करने से तो इन हुतात्माओं का निरादर होगा।' धन्य हैं ऐसी मां जिन्होंने चाफेकर बंधुओं जैसे वीर सपूतों को जन्म दिया!

> **“चापेकर बंधु वास्तव में भारत के क्रांतिकारी आंदोलन के जनक थे।”**
>
> - लाला लाजपत राय

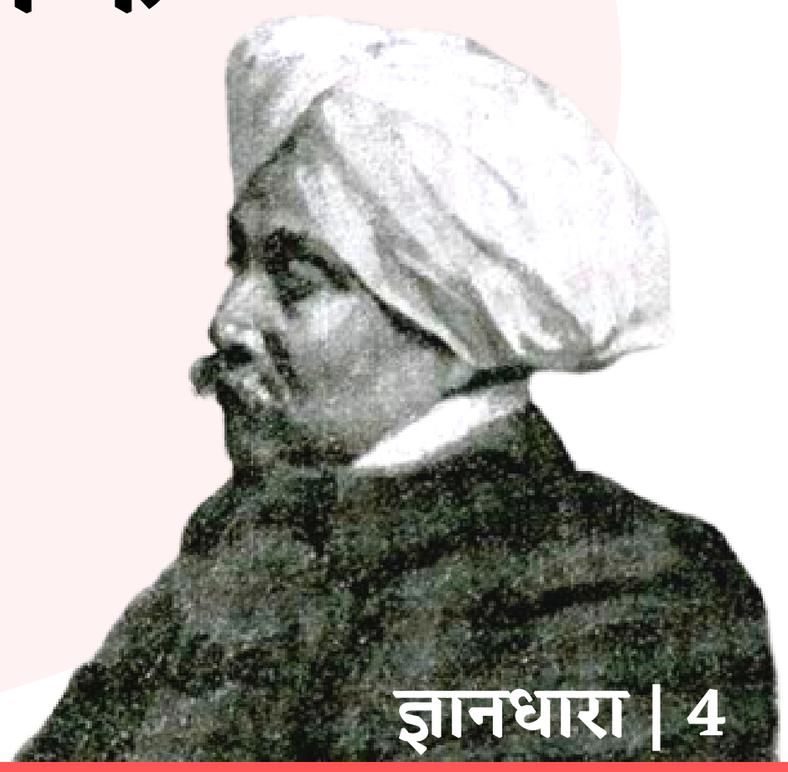

और भी दूं - रामावतार त्यागी

मन समर्पित, तन समर्पित,
और यह जीवन समर्पित।
चाहता हूँ देश की धरती, तुझे कुछ और भी दूँ।

माँ तुम्हारा ऋण बहुत है, मैं अकिंचन,
किंतु इतना कर रहा, फिर भी निवेदन-
थाल में लाऊँ सजाकर भाल मैं जब भी,
कर दया स्वीकार लेना यह समर्पण।

गान अर्पित, प्राण अर्पित,
रक्त का कण-कण समर्पित।
चाहता हूँ देश की धरती, तुझे कुछ और भी दूँ।

माँज दो तलवार को, लाओ न देरी,
बाँध दो कसकर, कमर पर ढाल मेरी,
भाल पर मल दो, चरण की धूल थोड़ी,
शीश पर आशीष की छाया धनेरी।

स्वप्न अर्पित, प्रश्न अर्पित,
आयु का क्षण-क्षण समर्पित।
चाहता हूँ देश की धरती, तुझे कुछ और भी दूँ।

तोड़ता हूँ मोह का बंधन, क्षमा दो,
गाँव मेरी, द्वार-घर मेरी, आँगन, क्षमा दो,
आज सीधे हाथ में तलवार दे-दो,
और बाएँ हाथ में ध्वज को थमा दो।

सुमन अर्पित, चमन अर्पित,
नीड़ का तृण-तृण समर्पित।
चाहता हूँ देश की धरती, तुझे कुछ और भी दूँ।

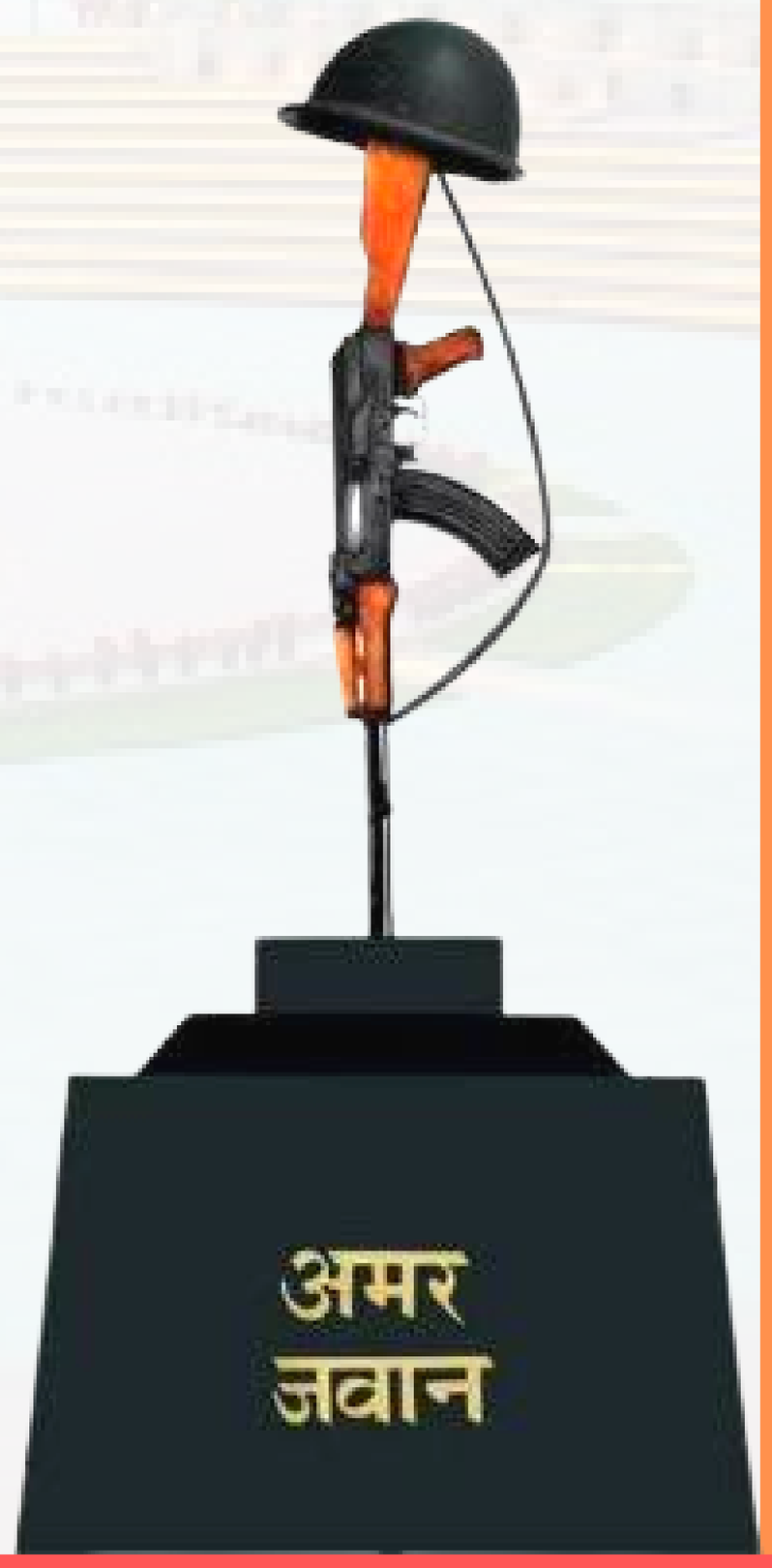

वन्दे मातरम्

- महाकवि सुब्रमण्यम भारती (महाकवि भारतियार)

जय भारत, जय वंदे मातरम् ॥
जय-जय भारत जय-जय भारत,
जय-जय भारत, वंदे मातरम् ।
जय भारत, जय वंदे मातरम्।।

एक वाक्य है केवल, जिसको दुहराना है,
आर्यभूमि की आर्य नारियों नर सूर्यों को : वंदे मातरम्।
जय भारत, जय वंदे मातरम्।।
एक वाक्य है केवल, जिसको दुहराना है,

घुट-घुटकर मरते भी अति पीड़ित जन-जन को : वंदे मातरम् ।
जय भारत जय वंदे मातरम्।।
प्राण जाएँ पर चिर नूतन उमंग से भरकर
केवल एक वाक्य गाएँगे हम सब मिलकर : वंदे मातरम् ।

जय भारत, जय वंदे मातरम्॥
जय-जय भारत, जय-जय भारत,
जय-जय भारत, वंदे मातरम् ।
जय भारत, जय वंदे मातरम् ॥

।। सुभाषितानि ।।

परोक्षे कार्यहंतारं प्रत्यक्षे प्रियवादिनम्।
वर्जयेत्तादृशं मित्रं विषकुम्भं पयोमुखम् ॥

भावार्थ :

पीठ पीछे कार्य को नष्ट करने वाले और सामने प्रिय बोलने वाले मित्र को वैसे ही त्याग देना चाहिए, जिस प्रकार घड़े के मुख (ऊपरी हिस्से) में दूध लगे किन्तु अन्दर विष भरे को त्याग देते हैं।

श्री रामकृष्ण परमहंस की प्रेरक भूमिका

- अभिज्ञ महाजन

भारत के सबसे प्रमुख आध्यात्मिक नेताओं में से एक स्वामी विवेकानंद अपने जीवनकाल में कई आध्यात्मिक शिक्षकों से गहराई से प्रभावित हुए थे। उनके जीवन की सबसे महत्वपूर्ण शख्सियतों में से एक श्री रामकृष्ण परमहंस थे जिन्होंने विवेकानंद की आध्यात्मिक यात्रा और विश्वदृष्टि को आकार देने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। श्री रामकृष्ण एक रहस्यवादी और आध्यात्मिक शिक्षक थे जो 19वीं शताब्दी के दौरान कोलकाता में रहते थे। उन्हें देवी काली के प्रति गहरी भक्ति और सभी धर्मों की एकता पर उनकी शिक्षाओं के लिए जाना जाता था। श्री रामकृष्ण का विवेकानंद पर गहरा प्रभाव था जिन्हें 1880 के दशक की शुरुआत में एक पारस्परिक मित्र ने उनसे मिलवाया था।

विवेकानंद को शुरू में श्री रामकृष्ण की शिक्षाओं पर संदेह था लेकिन समय के साथ उन्होंने अपने गुरु के लिए गहरा सम्मान और प्रशंसा विकसित की। श्री रामकृष्ण ने विवेकानंद को उनकी आध्यात्मिक खोज को आगे बढ़ाने के लिए प्रोत्साहित किया और उन्हें वेदांत और अन्य आध्यात्मिक परंपराओं की गहरी समझ विकसित करने में मदद की।

विवेकानंद ने श्री रामकृष्ण से जो सबसे महत्वपूर्ण सबक सीखा वह सभी धर्मों की एकता का विचार था। श्री रामकृष्ण ने सिखाया कि सभी धर्म ईश्वर को साकार करने के एक ही अंतिम लक्ष्य के लिए अलग-अलग मार्ग हैं। इस विचार का विवेकानंद पर गहरा प्रभाव पड़ा जो जीवन भर धार्मिक सहिष्णुता और सद्भाव को बढ़ावा देते रहे। उन्होंने विवेकानंद को अपने स्वयं के आध्यात्मिक पथ को आगे बढ़ाने और दूसरों के साथ अपनी अंतर्दृष्टि साझा करने के लिए प्रोत्साहित किया। इस प्रोत्साहन और समर्थन ने विवेकानंद को वह आत्मविश्वास दिया जिसकी उन्हें अपने आप में एक आध्यात्मिक नेता बनने के लिए आवश्यकता थी। श्री रामकृष्ण की मृत्यु के बाद स्वामी विवेकानंद द्वारा 1897 में स्थापित रामकृष्ण मिशन के पीछे विवेकानंद प्रेरक शक्ति बन गए, यह वेदांत दर्शन के सिद्धांतों पर आधारित एक आध्यात्मिक और परोपकारी संगठन है। जबकि संगठन मुख्य रूप से अपनी आध्यात्मिक शिक्षाओं और सामाजिक सेवा गतिविधियों के लिए जाना जाता है, इसने ब्रिटिश औपनिवेशिक शासन से स्वतंत्रता के लिए भारत के संघर्ष में भी महत्वपूर्ण भूमिका निभाई।

रामकृष्ण मिशन ने स्वतंत्रता आंदोलन में योगदान देने वाले प्रमुख तरीकों में से एक सामाजिक सेवा और शिक्षा पर जोर दिया था। संगठन ने पूरे भारत में स्कूलों, अस्पतालों और अन्य संस्थानों की स्थापना की, जो उन समुदायों को आवश्यक सेवाएं प्रदान करते थे जिन्हें अक्सर औपनिवेशिक सरकार द्वारा उपेक्षित किया जाता था। इन संस्थानों ने सीखने और सामुदायिक आयोजन के केंद्रों के रूप में भी काम किया, जिससे स्वतंत्रता की लड़ाई में भारतीयों को संगठित करने में मदद मिली।

रामकृष्ण मिशन अहिंसा और शांतिपूर्ण प्रतिरोध के सिद्धांतों को बढ़ावा देने में भी सक्रिय था जो स्वतंत्रता आंदोलन के केंद्र में थे। स्वामी विवेकानंद और संगठन के अन्य नेताओं का मानना था कि सच्ची स्वतंत्रता प्राप्त करने और एक न्यायसंगत समाज बनाने के लिए करुणा, प्रेम और सहिष्णुता जैसे आध्यात्मिक मूल्य आवश्यक थे।

सामाजिक न्याय और राष्ट्रीय मुक्ति के लिए रामकृष्ण मिशन की प्रतिबद्धता पूरे भारत में विभिन्न स्वतंत्रता आंदोलनों के समर्थन में परिलक्षित हुई। संगठन ने महात्मा गांधी और सुभाष चंद्र बोस जैसे स्वतंत्रता सेनानियों को नैतिक समर्थन प्रदान किया, और इसके सदस्यों ने ब्रिटिश शासन के खिलाफ विरोध प्रदर्शनों और सविनय अवज्ञा के अन्य रूपों में भाग लिया।

स्वतंत्रता संग्राम में अपने प्रत्यक्ष योगदान के अलावा, रामकृष्ण मिशन ने इस अवधि के दौरान भारत के बौद्धिक और सांस्कृतिक परिदृश्य को आकार देने में भी महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। आध्यात्मिक मूल्यों, समाज सेवा और शिक्षा पर अपने जोर के माध्यम से, संगठन ने स्वतंत्रता आंदोलन के लिए आवश्यक राष्ट्रीय गौरव और सांस्कृतिक पहचान की भावना पैदा करने में मदद की।

आज रामकृष्ण मिशन भारतीय समाज में एक महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है, जो आध्यात्मिकता, सामाजिक सेवा और सांस्कृतिक एकता के मूल्यों को बढ़ावा देता है जो स्वतंत्रता संग्राम के केंद्र में थे। इसकी विरासत इन मूल्यों की स्थायी शक्ति और व्यक्तियों और समुदायों को समान रूप से प्रेरित करने और बदलने की उनकी क्षमता का एक वसीयतनामा है।

मेंढक राज और नाग

- पंचतंत्र से

एक कुएं में बहुत से मेंढक रहते थे। उनके राजा का नाम था गंगदत्त। गंगदत्त बहुत झगड़ालू स्वभाव का था। आसपास दो-तीन और भी कुएं थे। उनमें भी मेंढक रहते थे। हर कुएं के मेंढकों का अपना राजा था।

हर राजा से किसी न किसी बात पर गंगदत्त का झगड़ा चलता ही रहता था। वह अपनी मूर्खता से कोई गलत काम करने लगता और बुद्धिमान मेंढक रोकने की कोशिश करता तो मौका मिलते ही अपने पाले गुंडे मेंढकों से पिटवा देता। कुएं के मेंढकों के भीतर गंगदत्त के प्रति रोष बढ़ता जा रहा था। घर में भी झगड़ों से चैन न था। अपनी हर मुसीबत के लिए दोष देता।

एक दिन गंगदत्त पड़ोसी मेंढक राजा से खूब झगड़ा। खूब तू-तू, मैं-मैं हुई। गंगदत्त ने अपने कुएं में आकर बताया कि पड़ोसी राजा ने उसका अपमान किया है। अपमान का बदला लेने के लिए उसने अपने मेंढकों को आदेश दिया कि पड़ोसी कुएं पर हमला करें सब जानते थे कि झगड़ा गंगदत्त ने ही शुरू किया होगा।

कुछ सयाने मेंढकों तथा बुद्धिमानों ने एकजुट होकर एक स्वर में कहा, 'राजन, पड़ोसी कुएं में हमसे दुगने मेंढक हैं। वे स्वस्थ व हमसे अधिक ताकतवर हैं। हम यह लड़ाई नहीं लड़ेंगे।'

गंगदत्त सन्न रह गया और बुरी तरह तिलमिला गया। मन ही मन उसने ठान ली कि इन गद्दारों को भी सबक सिखाना होगा। गंगदत्त ने अपने बेटों को बुलाकर भड़काया, 'बेटा, पड़ोसी राजा ने तुम्हारे पिताश्री का घोर अपमान किया है। जाओ, पड़ोसी राजा के बेटों की ऐसी पिटाई करो कि वे पानी मांगने लग जाएं।'

गंगदत्त के बेटे एक-दूसरे का मुंह देखने लगे। आखिर बड़े बेटे ने कहा, 'पिताश्री, आपने कभी हमें टर्राने की इजाजत नहीं दी। टर्राने से ही मेंढकों में बल आता है, हौसला आता है और जोश आता है। आप ही बताइए कि बिना हौसले और जोश के हम किसी की क्या पिटाई कर पाएंगे?' अब गंगदत्त सबसे चिढ़ गया। एक दिन वह कुढ़ता और बड़बड़ाता कुएं से बाहर निकल इधर-उधर घूमने लगा।

उसे एक भयंकर नाग पास ही बने अपने बिल में घुसता नजर आया। उसकी आंखें चमकीं। जब अपने दुश्मन बन गए हों तो दुश्मन को अपना बनाना चाहिए। यह सोच वह बिल के पास जाकर बोला, 'नागदेव, मेरा प्रणाम।'

नागदेव फुफकारा, 'अरे मेंढक मैं तुम्हारा बैरी हूं। तुम्हें खा जाता हूं और तू मेरे बिल के आगे आकर मुझे आवाज दे रहा है।

गंगदत्त टर्राया, 'हे नाग, कभी-कभी शत्रुओं से ज्यादा अपने दुख देने लगते हैं। मेरा अपनी जाति वालों और सगों ने इतना घोर अपमान किया है कि उन्हें सबक सिखाने के लिए मुझे तुम जैसे शत्रु के पास सहायता मांगने आना पड़ा है। तुम मेरी दोस्ती स्वीकार करो और मजे करो।'

नाग ने बिल से अपना सिर बाहर निकाला और बोला, 'मजे, कैसे मजे?'

गंगदत्त ने कहा, 'मैं तुम्हें इतने मेंढक खिलाऊंगा कि तुम मोटाते-मोटाते अजगर बन जाओगे।'

नाग ने शंका व्यक्त की, 'पानी में मैं जा नहीं सकता। कैसे पकडूंगा मेंढक?'

गंगदत्त ने ताली बजाई, 'नाग भाई, यहीं तो मेरी दोस्ती तुम्हारे काम आएगी। मैंने पड़ोसी राजाओं के कुओं पर नजर रखने के लिए अपने जासूस मेंढकों से गुप्त सुरंगें खुदवा रखीं हैं। हर कुएं तक उनका रास्ता जाता है। सुरंगें जहां मिलती हैं, वहां एक कक्ष है। तुम वहां रहना और जिस-जिस मेंढक को खाने के लिए कहूं, उन्हें खाते जाना।'

नाग गंगदत्त से दोस्ती के लिए तैयार हो गया। क्योंकि उसमें उसका लाभ ही लाभ था। एक मूर्ख बदले की भावना में अंधे होकर अपनों को दुश्मन के पेट के हवाले करने को तैयार हो तो दुश्मन क्यों न इसका लाभ उठाए?

नाग गंगदत्त के साथ सुरंग कक्ष में जाकर बैठ गया। गंगदत्त ने पहले सारे पड़ोसी मेंढक राजाओं और उनकी प्रजाओं को खाने के लिए कहा। नाग कुछ सप्ताहों में सारे दूसरे कुओं के मेंढकों को सुरंगों के रास्ते जा-जाकर खा गया। जब सब समाप्त हो गए तो नाग गंगदत्त से बोला, 'अब किसे खाऊं? जल्दी बता। चौबीस घंटे पेट फुल रखने की आदत पड़ गई है।'

गंगदत्त ने कहा, 'अब मेरे कुएं के सभी सयाने और बुद्धिमान मेंढकों को खाओ।'

वह खाए जा चुके तो प्रजा की बारी आई। गंगदत्त ने सोचा, 'प्रजा की ऐसी की तैसी। हर समय कुछ न कुछ शिकायत करती रहती है। उनको खाने के बाद नाग ने खाना मांगा तो गंगदत्त बोला, 'नाग मित्र, अब केवल मेरा कुनबा और मेरे मित्र बचे हैं। खेल खत्म और मेंढक हजम।'

नाग ने फन फैलाया और फुफकारने लगा, 'मेंढक, मैं अब कहीं नहीं जाने का। तू अब खाने का इंतजाम कर वर्ना।'

गंगदत्त की बोलती बंद हो गई। उसने नाग को अपने मित्र खिलाए फिर उसके बेटे नाग के पेट में गए। गंगदत्त ने सोचा कि मैं और मेंढकी जिंदा रहे तो बेटे और पैदा कर लेंगे। बेटे खाने के बाद नाग फुफकारा, 'और खाना कहां है? गंगदत्त ने डरकर मेंढकी की ओर इशार किया। गंगदत्त ने स्वयं के मन को समझाया, 'चलो बूढ़ी मेंढकी से छुटकारा मिला। नई जवान मेंढकी से विवाह कर नया संसार बसाऊंगा।'

मेंढकी को खाने के बाद नाग ने मुंह फाड़ा, 'खाना।'

गंगदत्त ने हाथ जोड़े, 'अब तो केवल मैं बचा हूं। तुम्हारा दोस्त गंगदत्त। अब लौट जाओ।'

नाग बोला, 'तू कौन-सा मेरा मामा लगता है और उसे हड़प गया।

सीखः अपनो से बदला लेने के लिए जो शत्रु का साथ लेता है, उसका अंत निश्चित है।

जिसके पास बुद्धि है, उसी के पास बल है,
बुद्धिहीन में बल कहां।

- पं. विष्णु शर्मा

तमसो मा ज्योतिर्गमय

- डॉ. सुरेश कुमार शुक्ल 'संदेश'

मैं उस प्रकाश के अनन्त कोश का ही प्रकाश हूँ जिससे विलग होकर उज्ज्वल न रह सका धीरे धीरे सांसारिकता के अन्धकार से घिरकर स्वयं को ही भूल गया पीड़ा हुई और फिर अपने मूल की ओर लौटने की छटपटाहट, फिर क्या वाणी पुकार उठी- मुझे इस सघन अन्धकार से प्रकाश की ओर ले चलो। ,

भारतीय चिन्तन दर्शन उक्त तथ्य से सदा सर्वदा से समृद्ध रहा है। जिस संस्कृति ने संसार में सर्वप्रथम समष्टिवाद का प्रवर्तन किया, वह और कोई नहीं भारतीय संस्कृति ही है । समष्टिवाद का मूल समन्वयात्मकता एवं सर्वे भवन्तु सुखिनः की पवित्र भावभूमि पर आधारित है। अतः परमसत्ता से निरन्तर यही प्रार्थना है कि मुझे अज्ञान रूपी अन्धकार से निकालकर सद्ज्ञान रूपी प्रकाश की ओर ले चलो और मेरे मन में कभी भी अज्ञान का अँधेरा न होने पाये ताकि मैं जीव मात्र के प्रति मंगल की भावना से परिपूर्ण रह सकूँ क्योकि जब तक मेरा मन अज्ञान के अँधेरे से घिरा रहेगा तब तक में सांसारिक विषयों विकारों, दुर्विचारों एवं दुर्गुणों से ग्रसित रहकर स्वयं ही साक्षात् अमंगल का स्वरूप बना रहूँगा फिर भला किसी अन्य जीव के प्रति करुणा दया ममता एवं उदारता का भाव कैसे रख पाऊँगा ? जीवन में प्रकाश अन्धकार सुख दुख ज्ञान अज्ञान का आना भी हमारे पूर्व संचित कर्मों एवं संस्कारों का ही - परिणाम है। पापकर्मी के संचित फल प्रकट होते हैं, हमारे भीतर का ज्ञानरुपी प्रकाश कहीं शून्य में विलीन होने लगता हैं और अज्ञान का अँधेरा धीरे धीरे हमारे मनोजगत को घेर लेता है और इसी प्रकार सत्कर्मों के परिणाम उदित होने पर ज्ञान का प्रकाश स्वयं ही प्रस्फुटित होने लगता है तथा अज्ञान का तम बिना किसी प्रयास के नष्ट हो जाता है इसीलिए हमारे ऋषियों ने सदैव ही उस परासत्ता से यही प्रार्थना की है कि मुझे अन्धकार से प्रकाश की ओर ले चलो।

आज सम्पूर्ण अयोध्या में विगत चौदह वर्षों से घिरे हुए अन्धकार के बादल छटने वाले हैं श्रीराम जी के वनवास की अवधि आज ही पूर्ण हो रही है उनके आगमन का समय एकदम निकट टा गया है। धरती के कण-कण से सूर्य की लहर लहर से वायु के शीतल प्रवाह से अरुणोदय की बिखरी लालिमा से मोतियों के समान चमकते हुए ओसकणों से एवं बाल वृद्ध सबके मुरझाए हुए मुखमण्डलों से उल्लास, उमंग से भरी हुई दिव्य चेतना का विस्तार हो उठा है। हर ओर अजब गजब की नवीनता द्रुत जीवन को आलोकित कर रही है। कहीं भी निराशा हताशा लेश मात्र भी दिखाई नहीं दे रही है।

ऐसा लगता है जैसे श्री अवध के कण-कण से राम विरह से भीगा हुआ अन्धकार स्वयं निकलकर कहीं अज्ञात में लय हो रहा है उसे हटाने के लिए किसी प्रकार का कोई भी प्रयास करने की आवश्यकता नही है मानो अचानक ही अन्धकार का अवध प्रवास समाप्त हो गया है और वह बिना कुछ कहे ही पलायन करने को विवश है। ज्ञान स्वरुप श्रीराम के अवध आने की आहट मात्र से सम्पूर्ण अवध का वातावरण आलोकित होने लगा है जैसे किसी बड़े कक्ष में एक दीप जलाकर रख दिया जाये जो किसी ऐसे स्थान पर जहाँ से प्रकाश का विस्तार पूरे कक्ष में हो, किन्तु वह दीप न दिखाई पड़े उसी प्रकार राम का प्रभाव स्वरुप प्रकाश तो अवध में सर्वत्र विद्यमान है, किन्तु वे स्वयं दिखाई नहीं देते हैं फिर भी उनके प्रकाश रूप से सभी प्रेरित एवं प्रभावित होते हैं। यही कारण है कि गोस्वामी जी ने ईश्वर को 'सहज प्रकास रूप भगवाना कहकर उनकी सर्वत्र उपस्थिति को प्रमाणित किया है। जैसे बरसात के दिनों में अक्सर सूर्य को बादलों की ओट में रहना पड़ता है, वह कई-कई दिन तक दिखाई नही पड़ता फिर भी हमें दिन का बोध होता हैं, जबकि दिन होने का कारण 'सूर्य' दिखाई नहीं दे रहा है। इसी प्रकार ईश्वर सामान्य जन को दिखाई नहीं देता फिर भी समान रूप से सर्वत्र व्याप्त है। राम अभी प्रत्यक्ष रूप में श्री अवध में आयें नही हैं किन्तु उनकी सूक्ष्म उपस्थिति का प्रभाव तो दिखाई दे रहा है। वातावरण पूर्णतया राममय हो रहा है। राम नाम के प्रकाश से जगमगाता हुआ अवध आनन्द से भर रहा है। बस एक ही भावना सबके मन में हैं कि हम अपने आनन्द अपने प्रकाश अपने ज्ञान और अपने प्राणों के प्राणस्त्रोत श्रीराम का दर्शन करें वह भी शीघ्रता से जैसे जैसे जीवन में प्रकाश बढ़ता है। वैसे वैसे जीव में उसके स्रोत तक पहुँचने की उत्कण्ठा तीव्र होती चली जाती कि कब प्रभुराम का, आगमन हो और हम अपलक नेत्रों से उनका दर्शन कर परम तृप्ति को प्राप्त करें ।

ईश्वर, ज्ञान और प्रकाश को मनीषियों ने एक ही तत्व की अलग अलग संज्ञा से अभिहित किया है। तीनों में कहीं भी किसी प्रकार का भेदभाव दृष्टि में नही आता। सूर्य नारायण की चाहे कोई आरती करे और चाहे आलोचना, वे प्रकाश के दान में कोई भेदभाव नहीं करते; वे ऐसा कभी नही करते कि आस्थावान भक्तों एवं सज्जनो को ही प्रकाश एवं ऊर्जा प्रदान करें तथा दुष्ट जनो को वंचित रखें ऐसे ही लगन एवं निष्ठा के साथ विद्या का अभ्यास चाहे एकलव्य करे चाहे अर्जुन; ज्ञान तत्व भी किसी के साथ जाति एवं वर्ण के आधार पर भेदभाव नही करता वह तो केवल पात्र भावना एवं साधना की निरन्तरता को महत्व देता है, और ईश्वर केवल मन के निर्मल होने की प्रतीक्षा मात्र करता है। वह किसी के जाति, कुल, धर्म, एवं सम्प्रदाय विशेष से सम्बन्ध नहीं रखता। वह देश काल की सीमाओं से भी परे है।

उसके लिए चाहे सुतीक्ष्ण हों, चाहे महात्मा भरत हो, चाहे जामवन्त हनुमान हो, चाहे सुग्रीव विभीषण हो, चाहे केवट हो, चाहे मांसभोजी गिद्धराज हो और चाहे दीनहीन ब्राह्मण सुदामा हो वह सभी को समान रूप से अपनत्व देने वाला है। उनका आत्मीय प्रेम पाने के लिए पहली और अन्तिम शर्त मन की निर्मलता है। मन की निर्मलता अर्थात भेद भाव युक्त अज्ञान के अँधेरे से मुक्त एवं समत्व भाव से सम्पन्न ज्ञान के शाश्वत प्रकाश से प्रकाशित अन्तः करण जहाँ पधारने में या प्रकट होने में उसे कोई संकोच नही होता। ज्यों-ज्यों रघुनाथ जी के अवध आने का समय निकट आ रहा है सम्पूर्ण अवध वासियों की व्याकुलता बढ़ती जा रही है और भरत भैया की दशा का तो वर्णन ही नहीं सम्भव है। ऐसी परिस्थिति में कोई सत्पुरुष आकर उचित संकेत कर दे तो पीड़ा दायी व्याकुलता आनन्द उत्कण्ठा में बदल जाती है। जब कोई भक्त इस तरह की परिस्थित में होता है तब कोई न कोई भक्त आकर उसकी अभिलाशा को टूटने-बिखरने से बचाता है। भरत जी की व्याकुल एवं असहनीय स्थिति को सँभालने के लिए रघुनाथ जी द्वारा भेजे गये विप्र वेशधारी हनुमान जी राम के विरह सागर में डूबते हुए भरत जी के लिए जलयान सिद्ध होते हैं। हनुमान जी द्वारा पूर्ण समाज के सहित प्रभु के सकुशल लौटने का समाचार पाकर भरत जी के शिथिल हो रहे अंगों में मानो नयी ऊर्जा का संचार हो गया, वे असीम आनन्द से भरकर उछल पड़े। बार-बार हनुमान जी को गले लगाते हैं और अद्भुत पागल की तरह बार-बार कुशलक्षेम पूछते है। हनुमान जी सादर भाव सहित रामगाथा कहकर वापस चले जाते हैं। आनन्द की अधिकता में जैसे भरत जी को हनुमान जी में राम ही दिखाई देते थे वैसे ही हनुमानजी भरतजी में राम का दर्शन कर रहे थे। कुछ ही समय बाद अयोध्या के निकट पुष्पक विमान आता है, जिससे राम-सीता, लक्ष्मण, विभीषण, सुग्रीव आदि उतर कर नगर में प्रवेश करते हैं। सबके मन में एक प्रबल इच्छा है कि शीघ्रातिशीघ्र अपने राम के दर्शन करें। सबकी यह उत्कट इच्छा चरम सीमा को पार कर गयी और सभी को सभी में श्रीराम ही दिखाई पड़ने लगे। सम्पूर्ण अयोध्या मांगलिक कृत्यों एवं 'राम' के जयघोषों से गुंजायमान हो उठी । मार्गों से लेकर भवन के झरोखों तक से जगमगाते हुए आरती के थाल एवं दीप मालाओं से अवध की शोभा अनन्तगुनी हो उठी। ऐसा लगता था मानो विगत् चौदह वर्षों से अन्धकार में लिपटी हुई अयोध्या आज श्रीराम के अलौकिक प्रेम रूपी प्रकाश के सागर में अवगाहन एवं निमज्जन कर उठी।

विजयदशमी एवं प्रकाश पर्व पर प्रार्थना करें कि राम जी की कृपा से हम अपने भीतर जन्म जन्मान्तरो से जकड़े हुए कलुष को नष्टकर अन्तःकरण में विशुद्ध प्रेम की दीपमालिका प्रज्वलित करें और मन मन्दिर के कोने कोने को पावन प्रकाश से परिपूर्ण कर सच्चे अर्थों में दीपावली का सन्देश सम्पूर्ण मानवता को दे सकें। इसी में मानव जीवन की सार्थकता है और जीवन के अभीष्ट की सिद्धि भी।।

तोड़ती पत्थर

- सूर्यकांत त्रिपाठी निराला

वह तोड़ती पत्थर;
देखा उसे मैंने इलाहाबाद के पथ पर—
वह तोड़ती पत्थर।

कोई न छायादार
पेड़ वह जिसके तले बैठी हुई स्वीकार;
श्याम तन, भर बँधा यौवन,
नत नयन प्रिय, कर्म-रत मन,
गुरु हथौड़ा हाथ,
करती बार-बार प्रहार :—
सामने तरु-मालिका अट्टालिका, प्राकार।

चढ़ रही थी धूप;
गर्मियों के दिन
दिवा का तमतमाता रूप;
उठी झुलसाती हुई लू,
रुई ज्यों जलती हुई भू,
गर्द चिनगीं छा गईं,
प्रायः हुई दुपहर :—
वह तोड़ती पत्थर।

देखते देखा मुझे तो एक बार
उस भवन की ओर देखा, छिन्नतार;
देखकर कोई नहीं,
देखा मुझे उस दृष्टि से
जो मार खा रोई नहीं,
सजा सहज सितार,
सुनी मैंने वह नहीं जो थी सुनी झंकार
एक क्षण के बाद वह काँपी सुघर,
ढुलक माथे से गिरे सीकर,
लीन होते कर्म में फिर ज्यों कहा—
'मैं तोड़ती पत्थर।'

प्रोफेसर प्रगति कुमार ने एसएमवीडीयू के कुलपति का पदभार संभाला

प्रो. प्रगति कुमार ने श्री माता वैष्णो देवी विश्वविद्यालय (एसएमवीडीयू), कटड़ा के कुलपति का पदभार संभाला। डॉ. प्रगति कुमार ने दिल्ली प्रोद्यौगिकी विश्वविद्यालय में इलेक्ट्रिकल इंजीनियरिंग विभाग में प्रोफेसर के रूप में कार्य किया है, और उन्हें संघशासित जम्मू-कश्मीर के उपराज्यपाल एवं विश्वविद्यालय के माननीय कुलाधिपति श्री मनोज सिन्हा द्वारा श्री माता वैष्णो देवी विश्वविद्यालय के कुलपति के रूप में नियुक्त किया गया था। उन्होंने तीन साल की अवधि के लिए कुलपति का पदभार ग्रहण किया है।

उनकी रुचि के क्षेत्र सक्रिय नेटवर्क, एनालॉग इंटीग्रेटेड सर्किट, नॉन-लीनियर सर्किट डिजाइन, एनालॉग इंस्ट्रुमेंटेशन आदि हैं। उन्होंने दिल्ली प्रोद्यौगिकी विश्वविद्यालय में इलेक्ट्रिकल इंजीनियरिंग विभाग के प्रमुख और औद्योगिक अनुसंधान विकास के अधिष्ठाता के रूप में भी कार्य किया है। प्रो. प्रगति कुमार के पास 32 वर्षों से अधिक का व्यापक पेशेवर और अनुसंधान अनुभव है और वह देश के विभिन्न प्रतिष्ठित संस्थानों के शैक्षणिक निकायों के सदस्य रहे हैं। उन्हें विभिन्न अंतर्राष्ट्रीय/राष्ट्रीय पत्रिकाओं, पुस्तकों और प्रतिष्ठित सम्मेलनों में 55 से अधिक प्रकाशनों का श्रेय प्राप्त है। शिक्षण और अनुसंधान में उनके विशाल अनुभव से श्री माता वैष्णो देवी विश्वविद्यालय को सभी क्षेत्रों में सफलता हासिल करने में मदद मिलने की उम्मीद है। कुलपति का पदभार ग्रहण करने पर विश्वविद्यालय के कुलसचिव सभी अधिष्ठाता, वित्त अधिकारी और अन्य वरिष्ठ पदाधिकारियों ने उनका आत्मीयता से स्वागत किया।

शुभागमन

।। निवेदन ।।

राम, तुम्हें यह देश न भूले;
धाम-धरा-धन जाए भले ही,
यह अपना उद्देश्य न भूले।
निज भाषा, निज भाव न भूले,
निज भूषा, निज वेश न भूले ।
प्रभो, तुम्हें भी सिंधु पार से,
सीता का संदेश न भूले।

- मैथिलीशरण गुप्त

“

**भले ही तुम बाहर से संयम बरतते रहो,
मन में कलुष भरा हो, विचार गंदे हो तो
वह रोगी बनेगा ही।**

- संत ज्ञानेश्वर

कला कुंज

राजेन्द्र सोनी
अंशिका आर्ट्स, उत्तर प्रदेश

शफात तनवीर
अंशिका आर्ट्स, उत्तर प्रदेश

भारत के प्राचीन सूर्य मंदिर

भारत में सूर्यदेव के चार प्रमुख मंदिर हैं। इनमें उड़ीसा का कोणार्क सूर्य मंदिर गुजरात के मेहसाणा का मोढेरा सूर्य मंदिर राजस्थान के झालरापाटन का सूर्य मंदिर और कश्मीर का मार्तंड मंदिर शामिल है।

- **मार्तण्ड सूर्य मंदिर, कश्मीर**

इस मंदिर का निर्माण मध्यकालीन युग में 7वीं से 8वीं शताब्दी के दौरान हुआ था। इसे कार्कोट राजवंश के शासक महान सम्राट ललितादित्य मुक्तापीड़ ने बनवाया था। इस मंदिर के निर्माण की गणना सम्राट ललितादित्य के प्रमुख कार्यों में की जाती है। इस मंदिर में 84 स्तंभ हैं। इन स्तंभों को नियमित अंतराल पर रखा गया है। मंदिर की राजसी वास्तुकला बेहद खूबसूत है जो इसे अलग बनाती है। ऐसा कहा जाता है कि महान ललितादित्य सूर्य की पहली किरण निकलने पर सूर्य मंदिर में पूजा कर चारों दिशाओं में देवताओं का आह्वान कर ही अपनी दिनचर्या की शुरुआत करते थे।

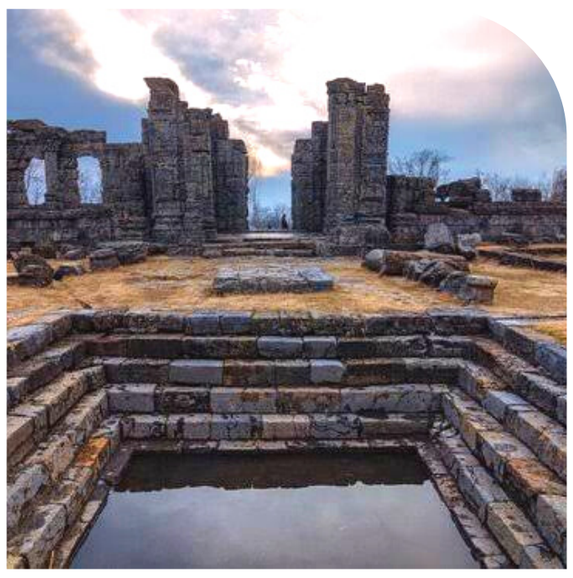

इसे 15वीं शताब्दी में आक्रांता सिकंदर बुतशिकन ने नष्ट कर दिया था। पुरातत्वविदों ने मंदिर को गंधार, गुप्त, ग्रीक, चीनी, रोमन, सीरियाई वास्तुकला की मिश्रित शैली का एक अच्छा उदाहरण है।

यह भव्य वृहदाकार मंदिर कश्मीर के स्थापत्य एवं शिल्प कला शैली का अनूठा उदाहरण है। मुख्य मंदिर भव्य कक्षयुक्त एक विशाल अहाते के मध्य में स्थित है। इसके प्रवेश द्वार की दीवारें, पत्रावलियों (फूल-पत्तियाँ युक्त), हसों के जोड़े, विष्णु एवं मानव आकृतियों से सुसज्जित है। मुख्य मंदिर आयताकार गर्भगृह, अन्तराल तथा विस्तृत मण्डप से युक्त हैं। मण्डप के दोनों ओर बने कक्ष इसकी मुख्य विशेषता है। इसके अन्तराल एवं मण्डप की दीवारों पर गंगा, यमुना, विष्णु तथा अन्य देव आकृतियाँ बने हैं। परिकोष्ठों में बने छोटे देवालय परवर्ती काल के हैं। इसकी संरचना में सुगठित देवरी पत्थरों का उपयोग किया गया है। मंदिर के अग्रभाग पर इन देवताओं के बीच सूर्य की संरक्षित प्रतिमा है जो घोड़े पर सवार हैं।

- **कोणार्क सूर्य मंदिर, उड़ीसा**

सूर्य देव को समर्पित, इस मंदिर का नाम दो शब्दों कोण और अर्क से जुड़कर बना है कोण यानि कोना और अर्क का अर्थ सूर्य है। यानी सूर्य देव का कोना। इसे कोणार्क के सूर्य मंदिर के नाम पहचाना जाता है। मंदिर का निर्माण 13वीं शताब्दी 1236 से 1264 ई. के मध्यकाल में गंगवंश के प्रथम नरेश नरसिंह देव ने करवाया था। इस मंदिर के निर्माण में प्रमुख रूप से बलुआ, ग्रेनाइट पत्थरों व कीमती धातुओं का इस्तेमाल किया गया है। मंदिर का निर्माण 1200 शिल्पकार ने दिन-रात मेहनत कर लगभग 12 वर्षों में बनाया था। यह मंदिर 229 फीट ऊंचा है इसमें एक ही पत्थर से निर्मित भगवान सूर्य की तीन मूर्तियां स्थापित की गई है। जो दर्शकों को बहुत ही आकर्षित करती है। मंदिर में सूर्य के उगने, ढलने व अस्त होने सुबह की स्फूर्ति, सायंकाल की थकान और अस्त होने जैसे सभी भावों को समाहित करके सभी चरणों को दर्शाया गया है। यह मंदिर ओडिशा राज्य में पुरी शहर से लगभग 37 किलोमीटर दूर चंद्रभागा नदी के तट पर स्थित है।

इस मंदिर का स्वरूप व बनावट अद्भुत शिल्पकला का नमूना है। एक बहुत बड़े और भव्य रथ के समान है जिसमें 12 जोड़ी पहिया हैं और रथ को 7 बलशाली घोड़े खीच रहे है। देखने पर ऐसा लगता है कि मानों इस रथ पर स्वयं सूर्यदेव बैठे है। मंदिर के 12 चक्र साल के बारह महीनों को परिभाषित करते हैं और प्रत्येक चक्र, आठ अरों से मिलकर बना है, जो हर एक दिन के आठ पहरों को प्रदर्शित करता हैं। वहीं अब सात घोड़ें हफ्ते के सात दिनों को दर्शाता है।

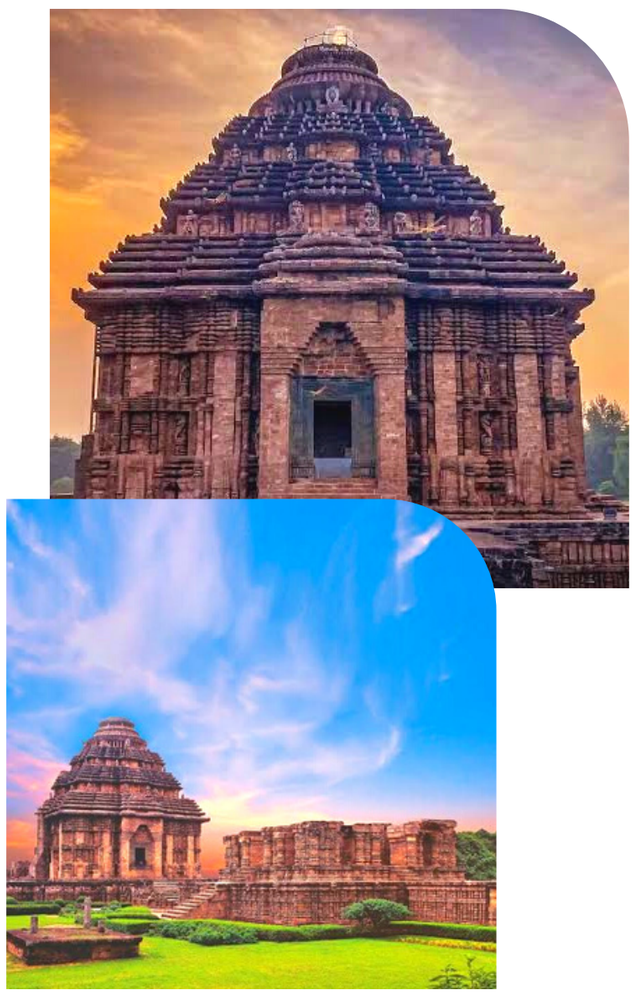

इस मंदिर की सबसे रोचक बात यह है कि मंदिर के लगे चक्रों पर पड़ने वाली छाया से हम समय का सही और सटीक अनुमान लगा सकते है। यह प्राकृतिक धूप घड़ी का कार्य करते हैं। वहीं मंदिर के उपरी छोर से भगवान सूर्य का उदय व अस्त देखा जा सकता है जो की मनभावन है।

इस मंदिर का सबसे बड़ा रहस्य यहां का चुम्बकीय ताकत है। प्रचलित कथाओं के अनुसार मंदिर के ऊपर 51 मीट्रिक टन का चुंबक लगा हुआ था। जिसका प्रभाव इतना अधिक प्रबल था जिससे समुद्र से गुजरने वाले जहाज इस चुंबकीय क्षेत्र के चलते भटक जाया करते थे और इसकी ओर खींचे चले आते थे। इन जहाजों में लगा कम्पास (दिशा सूचक यंत्र) गलत दिशा दिखाने लग जाता था। इसलिए उस समय के नाविकों ने उस बहुमूल्य चुम्बक को हटा दिया और अपने साथ ले गये। यह सुनने में थोडा अटपटा भले ही लगे, लेकिन अगर मंदिर को देखें तो मंदिर का निर्माण इस प्रकार किया गया था जैसे कोई सैंडविच हो जिसके बीच में लोहे की प्लेट थी, जिस पर मंदिर के पिलर अटके हुए थे। जिसके कारण ही लोग इन कथाओं पर भरोसा करते हैं।

- **मोढेरा सूर्य मंदिर, गुजरात**

यह सूर्य मन्दिर विलक्षण स्थापत्य और शिल्प कला का बेजोड़ उदाहरण है। इस मंदिर के निर्माण में जोड़ लगाने के लिए कहीं भी चूने का प्रयोग नहीं किया गया है। इस मंदिर को सोलंकी वंश के राजा भीमदेव प्रथम ने 1026 ई. में दो हिस्सों में बनवाया था। जिसमें पहला हिस्सा गर्भगृह का और दूसरा सभामंडप का है। गर्भगृह में अंदर की लंबाई 51 फुट, 9 इंच और चौड़ाई 25 फुट, 8 इंच है। मंदिर के सभामंडप में कुल 52 स्तंभ हैं। इन स्तंभों पर विभिन्न देवी-देवताओं के चित्रों के अलावा रामायण और महाभारत के प्रसंगों को बेहतरीन कारीगरी के साथ दिखाया गया है। इन स्तंभों को नीचे की ओर देखने पर वह अष्टकोणाकार और ऊपर की ओर देखने से वह गोल नजर आते हैं। मंदिर का निर्माण कुछ इस प्रकार किया गया था कि सूर्योदय होने पर सूर्य की पहली किरण मंदिर के गर्भगृह को रोशन करे। सभामंडप के आगे एक विशाल कुंड है जो सूर्यकुंड या रामकुंड के नाम से प्रसिद्ध है। पाटन जिले से करीब 30 किलोमीटर दूर स्थित इस विराट मंदिर के कुल 3 हिस्से हैं। इसमें पहला हिस्सा सूर्य कुंड का है। सूर्य कुंड में कभी भी पानी नहीं सूखता है। इसके अलावा निर्माण के वक्त यहां सूर्यकुंड में कुल 108 मंदिर बनाए गए थे।

इसके अलावा मंदिर की बाहरी दीवारों पर कुल 364 हाथी और 1 शेर की आकृति बनी है जो कि एक कैलेंडर ईयर की गिनती बताती है। मंदिर का सबसे पिछला हिस्सा इसका गर्भगृह है। इसमें कुल 10 दिशाएं हैं। गर्भगृह के चारो और 108 हाथियों की कलाकृतियां हैं। 10 दिशाओं में 10 दिगपालों की कलाकृतियां हैं। सनातन धर्म की मान्यताओं के मुताबिक, नॉर्थ ईस्ट यानि ईशान कोण में भगवान शिव की प्रतिमा लगी है। इसके बाद उत्तर दिशा में भगवान कुबेर की प्रतिमा है, नॉर्थ वेस्ट यानि वायव्य कोण में भगवान वायु की प्रतिमा लगी है। गर्भगृह के पश्चिम दिशा में वरुण देवता यानि जल के देवता की मूर्ति बनी हुई है। गर्भगृह की दक्षिण पश्चिम दिशा में भगवान नैऋत्य की प्रतिमा है और इस दिशा को नैऋत्य दिशा भी कहते हैं। भगवान नैऋत्य को शिव का ही अवतार माना जाता है। इसी दिशा में भगवान विश्वकर्मा की ही मूर्ति लगी है। दक्षिण दिशा में मृत्यु के देवता यम की प्रतिमा लगी है। मंदिर की साउथ ईस्ट दिशा को आग्नेय कोण का रूप दिया गया है, जहां भगवान अग्नि की प्रतिमा स्थापित है। मंदिर के सबसे ऊपरी हिस्से में मां सरस्वती की प्रतिमा है, जो ये बताती है कि सनातन संस्कृति में ज्ञान सबसे अधिक बड़ा स्थान रखता था।

• **झालरापाटन सूर्य मंदिर, राजस्थान**

इस मंदिर की वास्तुकला कोणार्क सूर्य मंदिर और खजुराहो के मंदिर से मिलती जुलती है। मंदिर का निर्माण सूर्य के सात घोड़े वाले रथ की तरह है। इसी तरह इस मंदिर की आधारशिला ऐसी लगती है, जैसे वहाँ सात घोड़े विद्यमान हों। मंदिर में प्रवेश करने के लिए, तीन तरफ से तोरण द्वार बनाया गया है। बीच में एक मंडप है जो विशाल स्तंभों पर टिका है। स्तंभों पर अद्भुत कला उत्कीर्ण की गयी है। मंदिर के गर्भ गृह के बाहर मंदिर के तीन ओर उकेरी गई मूर्ति मंदिर और वास्तुकला की एक अनूठी मिसाल है। मंदिर का शीर्ष भूतल से लगभग 97 फीट ऊँचा है।

सबसे अद्भुत बात यह है कि मंदिर के चारों तरफ विराजित साधु की मूर्ति, इन मूर्तियों की व्यवस्था इतनी सुंदर है कि यह मूर्ति बिल्कुल सजीव है, ऐसा लगता है कि जैसे साधु वास्तव में घूम रहा है। प्रतिमाओं की केश सज्जा, जटा, पगड़ी और मुखड़ा या अन्य व्यक्ति भी बिल्कुल सजीव लगते हैं। शरीर सौष्ठव इतना नपा-तुला है, और भावमयी भंगिमा भी इतनी जीवंत है कि ऐसा लगता है कि ये सारी चीजें रात में जीवंत हो जाएंगी।

मंदिर का ऊर्ध्वमुखी कलात्मक अष्टदल कमल अत्यन्त सुन्दर एवं मनमोहक है। शिखरों के कलश अत्यन्त आकर्षक है। गुम्बदों की आकृति को देखकर मुग़लकालीन स्थापत्य एवं वास्तुकला का स्मरण हो जाता है। झालरापाटन के इस मंदिर का निर्माण सूर्य मंदिर में प्राप्त शिलालेख के अनुसार संवत् 872 (9 वीं शताब्दी) में प्रतिहार वंश के नागभट्ट द्वितीय द्वारा कराया गया था।

“

चाह नहीं, मैं सुरबाला के गहनों में गूँथा जाऊँ।
चाह नहीं, प्रेमी-माला में बिंध प्यारी को ललचाऊँ॥
चाह नहीं, सम्राटों के शव पर, हे हरि, डाला जाऊँ।
चाह नहीं, देवों के सिर पर चढ़ूँ, भाग्य पर इठलाऊँ॥
मुझे तोड़ लेना वनमाली।
उस पथ में देना तुम फेंक॥
मातृ-भूमि पर शीश चढ़ाने।
जिस पथ जावें वीर अनेक॥

- माखन लाल चतुर्वेदी
(पुष्प की अभिलाषा)

”

धन्यवाद!!

सर्वप्रथम ज्ञानदाता श्री गणेश व माँ शारदे को प्रणाम,श्री माँ वैष्णो देवी के चरणों मे हिंदी प्रकोष्ठ द्वारा ज्ञानधारा रूपी पुष्प को हम अर्पित कर रहे हैं। पत्रिका का यह अंक भारत के सांस्कृतिक जागरण को समर्पित है। भारत की संस्कृति विश्व में सबसे प्राचीन एवं मानवता के लिये कल्याण प्रद है, भारतीय संस्कृति के संरक्षण एवं प्रसारण में अनेक ऋषियों-मनीषियों का अनुपम योगदान रहा है, जिससे इसके यश में उत्तरोत्तर वृद्धि हुई है।

इस पत्रिका में साथ ही श्री माता वैष्णो देवी विश्वविद्यालय की भविष्यद्रष्टा सोच,महापुरुषों के तेजस्वी वाक्य, जीवनोपयोगी कथाएं, लेख/कविता व कला भी समाहित की गयी है। ज्ञानधारा पत्रिका इस अंक के रूप में माँ वैष्णवी के आशीर्वाद व गुरुजनों के मार्गदर्शन से ज्ञान की ज्योति को लेकर युग निर्माण की राह प्रशस्त कर रही है व करती रहेगी।

पत्रिका का पाठन कर आनंद का अनुभव करें।

शुभकामनाओं सहित!

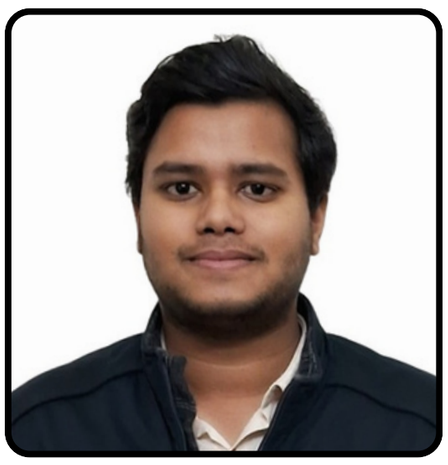

- मिलिन्द शुक्ल
(छात्र सचिव, हिन्दी प्रकोष्ठ)

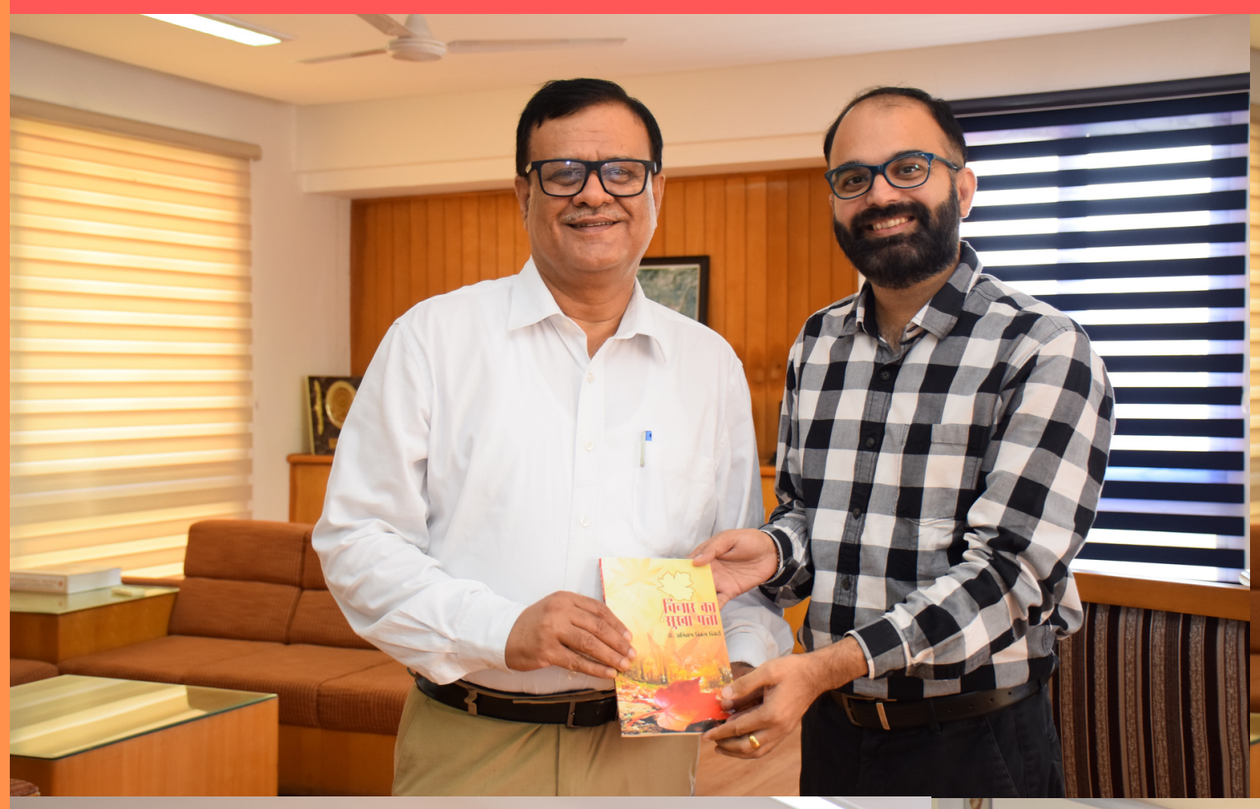

हिन्दी प्रकोष्ठ द्वारा हिन्दी पखवाड़ा एवं पुरस्कार वितरण समारोह का सफल आयोजन किया गया।

विश्वविद्यालय में किसान संगोष्ठी का आयोजन किया गया।

“बिना कष्ट के ये जीवन एक बिना नाविक के नाव जैसा है, जिसमे खुद का कोई विवेक नहीं। एक हल्के हवा के झोके में भी चल देता है।

- ईश्वर चंद्र विद्यासागर”

विज्ञानं ब्रह्म

श्री माता वैष्णो देवी विश्वविद्यालय

[विश्वविद्यालय अनुदान आयोग (यूजीसी) अधिनियम 1956 की धारा 2 (एफ) और 12 (बी) के तहत]

श्री माता वैष्णो देवी विश्वविद्यालय (एसएमवीडीयू) की स्थापना जम्मू और कश्मीर श्री माता वैष्णो देवी विश्वविद्यालय अधिनियम 1999 के तहत की गई है। यह पूरी तरह से आवासीय विश्वविद्यालय है। इसका उद्घाटन 19 अगस्त 2004 को भारत के तत्कालीन माननीय राष्ट्रपति डॉ० ए.पी.जे. अब्दुल कलाम के करकमलों से हुआ। डॉ० कलाम ने विश्वविद्यालय के छात्रों को पहला व्याख्यान भी दिया। इस विश्वविद्यालय में अभियांत्रिकी, विज्ञान, प्रबंधन, परिचर्या और मानविकी एवं सामाजिक विज्ञान संकाय हैं। इसके 15 विभागों में बी.टेक., बी.आर्क., एम.टेक., बी.एससी., एम.एससी., बी.ए., एमए और पीएच.डी. स्तर पर पढ़ाई होती है।

----आधारभूत मूल्य----

- शैक्षणिक सत्यनिष्ठा और उत्तरदायित्व
- प्रत्येक व्यक्ति के विचारों का सम्मान और सहिष्णुता
- राष्ट्रीय और अंतर्राष्ट्रीय प्रासंगिकता वाले विषयों पर ध्यान देना
- बौद्धिक उत्कृष्टता और रचनात्मकता की सराहना
- वैज्ञानिक अन्वेषण की निरंतरता

परिसर कार्यालय:

श्री माता वैष्णो देवी विश्वविद्यालय
उपडाकघर, कटड़ा
जम्मू और कश्मीर केंद्र शासित प्रदेश-182320
ईमेल: info@smvdu.ac.in
फैक्स: 01991-285694

जनसंपर्क कार्यालय:

श्री माता वैष्णो देवी विश्वविद्यालय
सरस्वती धाम,रेल प्रमुख परिसर,जम्मू
जम्मू और कश्मीर केंद्र शासित प्रदेश-182320
संपर्क नंबर: 9622885588
फोन/फैक्स: 0191-2470067

विज्ञानं ब्रह्म

विश्वविद्यालय का दर्शन (Vision) एवं उद्देश्य (Mission) तथा गुणवत्ता नीति (Quality Policy)

दृष्टि

राष्ट्रीय अखंडता और मानवीय मूल्यों की पवित्रता का संरक्षण करते हुए भारतीय समाज और सम्पूर्ण विश्व की सेवा के लिए प्रतिभाशाली युवाओं के विकास एवं संपोषण हेतु एक उत्कृष्ट वैज्ञानिक और तकनीकी विश्वविद्यालय की स्थापना

उद्देश्य

उत्कृष्टता के अंतर्राष्ट्रीय प्रतिमानों के साथ समाजोपयोगी शिक्षा, विद्वत्ता एवं अनुसंधान को बढ़ावा देना

गुणवत्ता नीति

पूर्ण सहभागिता एवं पारदर्शी व्यवस्था द्वारा उत्तम शैक्षणिक वातावरण का सदुपयोग कर लोगों में निष्ठा, दक्षता और मानवीय मूल्यों से परिपूर्ण बौद्धिक और वैयक्तिक क्षमता का अनवरत विकास

हिन्दी प्रकोष्ठ
श्री माता वैष्णो देवी विश्वविद्यालय
कटड़ा,जम्मू एवं कश्मीर,भारत-182320

----हिन्दी प्रकोष्ठ----

श्री माता वैष्णो देवी विश्वविद्यालय में हिन्दी प्रकोष्ठ की स्थापना का निर्णय यूजीसी के निर्देशों के अनुपालन में विश्वविद्यालय कार्यकारी परिषद् द्वारा इसकी 24वीं बैठक में 23.11.2015 को लिया गया। इसके क्रियान्वयन की अधिसूचना 15.02.2016 को निर्गत की गयी। इसके क्रियान्वयन के लिए समन्वयक/नोडल अधिकारी को नियुक्त किया गया साथ ही छात्र सचिव के पद का भी सृजन किया गया। हिन्दी प्रकोष्ठ के निम्नलिखित उद्देश्य और दायित्व निर्धारित किए गए:

1. कार्यालय और विद्यार्थियों से संबन्धित सूचनाओं को हिन्दी माध्यम से करने को बढ़ावा देना,
2. विद्यार्थियों को हिंदी में सीखने और बातचीत करने के लिए तथा राष्ट्रीय स्तर की वाद-विवाद/भाषण, निबंध लेखन आदि प्रतियोगिताओं में भाग लेने के लिए प्रोत्साहित करना,
3. पुस्तकालय में सामान्य अभिरुचि पठन अनुभाग के लिए महत्वपूर्ण और प्रसिद्ध हिंदी पुस्तकें/साहित्य और हिंदी पत्र-पत्रिकाओं को खरीदना और सदस्यता लेना,
4. समाचार पत्र, छात्र पत्रिका आदि जैसे संस्थागत प्रकाशनों में हिंदी लेखों का प्रकाशन,
5. हिन्दी में संगोष्ठी/वाद-विवाद/लोकप्रिय व्याख्यान आदि आयोजित करना,
6. हिंदी में अनुवाद, ऑनलाइन सामग्री का निर्माण आदि को प्रोत्साहित करें, नाटक, नुक्कड़ नाटक, एकांकी आदि जैसे थिएटर कार्यक्रमों का आयोजन करना,
7. चर्चा करें और गतिविधियों का एक कैलेंडर तैयार करें और पुरस्कारों का प्रस्ताव भी देना,
8. हिंदी के प्रचार के लिए किसी अन्य स्वीकृत गतिविधि का क्रियान्वयन करना।

अपनी रचनाएं भेजें: hindi.cell@smvdu.ac.in

www.hindicell.smvdu.ac.in